सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 187

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 38
जुलाई – 2020

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

"गुरुपूर्णिमा"

प्रार्थनाकासामर्थ्य (प.पू. हाजीबाबा 29.07.1961)

गुरूबंधु भगिनियों

बाबा ने पूछा, "मैने जो आपको, 'मेरी भूमिका' लिखने के लिए कहा था वह क्या आपने लिखी है?" भक्त ने उत्तर दिया, लिख कर तैयार है और आपको देना है। इस पर बाबा ने पूछा कि आपने, आपका लेखन, गुरूआज्ञानुसार निश्चित की हुई तारीख के दिन, नियुक्त सेवक के पास क्यों नहीं दिया?इसका अर्थ यह है कि अभी भी आप एक दूसरे को एक दूसरे से अलग सम–हजयते है। जैसे आपने बैंक मे जमा किए हुए पैसे, कैशियर आपसे लेता हैं परन्तु वे पैसे कैशियर की जेब में नहीं जाते है वे बैंक में ही जमा होते है, वैसे ही आपने नियुक्त सेवक को दिया हुआ आपका लेखन यही जमा हो जाता है।

बाबा ने एक भक्त की कॉपी (Note Book) देखी और पूछा, "यह क्या है?" भक्त ने उत्तर दिया, "आपकी

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

मुलाकात रफ (कच्ची) लिखी है।'' उस पर बाबा बोले कि आपके जीवन में हमेशा यह रफ फेयर चल रहा है। हमारी इस मुलाकात के लिए आप कहते है कि रफ में लिखी है, तो फिर, आपके मुकद्दर पर हम भी रफ (कच्चा) लिखेंगे तो चलेगा क्या?तब तो आप चिल्लाओगे और कहेंगे कि बाबा जल्दी फेयर और फाईनल करो।

अगर आपको यह पूछा जाए कि ईश्वर के बारे में आपकी क्या कल्पना है, व आप उनसे क्या माँगना चाहते है, तो आप सुख, शांति, समाधान माँगतें है। वह सुख शांति आप अपनी काया, वाचा, मन से अनुभव कर सकते है। भगवान के बारे में कथा पुराणों में जो कुछ लिखा है वह या कुछ सिद्ध साधकों के अनुभवों को देखा तो हमें यह दिखाई देता है कि भगवान ऐहिक सुख देते है। हमने पढ़ा है कि किसी एक राजा ने अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा भेजा व उसे कुछ मिला। किसी ने कुछ व्रत किया व उसकी मनीषा (इच्छा) पूरी हो गयी। उच्चतम स्तर पर पहुँचे हुए ऋषिमुनि भी कामधेनु के मोह से अलिप्त नहीं रह सके। परन्तु आज तक इसके ऊपर (पार) जाकर ईश्वर क्या है यह खोजने का प्रयत्न नहीं किया गया। संक्षिप्त में ऐहिक व नश्वर सुख जो देते हैं वे ईश्वर, ऐसी कल्पना आपने कर ली और इसी भावना से आप सब लोग इतने वर्षों से यहाँ आकर प. पू. बाबा से ऐसे ही सुख माँगतें आए हो। परन्तु जिस दिन ईश्वर ने आपको जन्म दिया उसी समय उन्होंने आपके अंतिम क्षणतक याने आपके मुँह मे गंगाजल व तुलसी पत्र डालने तक की पूरी व्यवस्था करके रखी है। उन्होंने आपके जीवन मे नित्य व आवश्यक जरूरतों का यथायोग्य बंदोबस्त किया है। इसके अलावा आपके जो ऋणानुबंध है, उनके संबंध मे भी उन्होंने योग्य व्यवस्था की है। उदाहरण के तौर पर पिछले 5–6 महीनों मे 'क्ष' नाम के भक्त के पास हम चाय पानी के लिए नहीं गए, इसका अर्थ यह नहीं कि उनका व हमारा ऋणानुबंध नहीं हैं। परन्तु हमें हमारी रोटी बाबा से मिल रही थी इसलिए हमें उनके घर जाने की जरूरत नहीं पड़ी (महसूस हुई)। इस दृष्टि से देखा जाए तो उनके पास हमारे नाम की जो रोटियाँ बची है वे अधिक (Surplus)

समझनी चाहिए। उसी तरह ऋणानुबंध की वजह से दो गुरूबंधुओं में 25 रू. का लेन देन का व्यवहार होना होता है। परन्तु जो लेने वाला है उसे वह 25 रू. की रकम किसी और से मिल गयी तो वह इस गुरूबंधु से क्यों माँगेगा?आपने जब जन्म लिया तब आप लालची (अधिक की इच्छा करने वाले) है यह ध्यान में लेते हुए आपको जो १ रोटी मिलने वाली थी उसकी जगह आपके लिए चार रोटीओं की व्यवस्था की गई है। इससे आप समझ जाएंगे कि आपको अपनी जरूरत की चीजें माँगने की जरूरत नहीं है।

किसी को मोटर–कार में घूमने से सुख मिलने वाला है, परन्तु जब तक उसकी काया मोटर में होगी तब तक ही वह सुखी रहेगा। कार खराब हो गयी तो वह दुःखी होगा। जैसे कार, यह उसका सुख प्राप्त करने का साधन है वैसे आपकी काया, वाचा और मन को सुख, शांति व समाधान साधना द्वारा मिलने वाला है। सितार एक वाद्य (instrument) है। उसकी तार छेडते ही उसमे से नाद निकलेगा ही! नाद निकालना सितार का धर्म है। परन्तु जो सितार बजाने वाला है वह सितार से नाद निकालने की शिक्षा नहीं लेता है। वह रागदारी व आलापों की शिक्षा लेता है और एक बार वह शिक्षा उसे प्राप्त हुई तो वह सितार मे से जो चाहे वह स्वर निकाल सकता है। उसी तरह आपने जब जन्म लिया उस समय ईश्वर ने आपके साथ ही आपका सुख, शांति, समाधान भेजा था। परन्तु वह सुख, समाधान अनुभव करने का ज्ञान आपने आत्मसात ना करने के कारण कृपाशिर्वाद कैसे प्राप्त होता है, यह आप समझ नहीं पाए। हम इस दुनिया में किसी भी चीज का उपभोग लेने के लिए नही तो, उसका अनुभव करने के लिए आए है। अगर आप कहोगे कि आप सुख का उपभोग लेना चाहते है, तो आपको दुःख भुगतने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। परन्तु सुख का अनुभव करना इसका अर्थ अलग है, जो यह है कि मैं खुद मोटर–उचयकार नहीं रखुँगा, वह

दूसरे की होगी, परन्तु उसमें सवार होकर मैं सुख की अनुभूती करुँगा। उसी तरह खाद्यपदार्थ बनाने वाला कोई और होता है, परन्तु उसके स्वाद का अनुभव आपकी जीभ लेती है। विधाता ने इतना सृष्टि सौंदर्य निर्माण किया है परन्तु उसका स्वाद (आनंद) मानव की आँखें लेती है। आप ईश्वर को व्यावहारिक मत बनाइए। बाबा को सब पता है। इसलिए वही चीजें बार–बार पूछकर बाबा का आशिर्वाद लेना याने चावल का धान निकालकर खेत के दूसरे धान को दिखाना और कहना कि ये देखो तुम्हारे भाई बंधु! यही किस्सा आपके जीवन मे हमेशा होता रहता है। मै कहता हूँ कि आपके ऊपर दुःख के पहाड़ भी टूट पडे, तो भी उसे झेलने के लिए जरूरी मनोधैर्य आपको अपनी हे भगवंता, नारायणा (हे भगवान, हमारे परिवार के.. ....) इस प्रार्थना से मिलना ही चाहिए। परन्तु वह मनोधैर्य प्राप्त होने के लिए 'हे भगवंता, नारायणा' इन शब्दों के उच्चारण के साथ इन शब्दों के पीछे सारे विश्व की शक्ति है, यह दृढ़ श्रद्धा मजबूत करने का काम आपका है।

सेवक,

।। शुभं भवतु ।।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible